पर्यावरण शिक्षा और आपदा प्रबन्धन

*डॉ. मणिमाला शर्मा

शोध सारांश

हमारी कल्पना की तुलना में पर्यावरण बहुत तेजी से दूषित हो रहा है। ज्यादातर मानव गतिविधयों के कारण पर्यावरण दूषित होते है। जिससे वैश्विक और क्षेत्रीय दोनों स्तर प्रभावित होते है। ओजान परत का पतला होना और ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन में वृद्धि वैश्विक स्तर पर होने वाले नुकसानों के उदाहरण है। जबकि जल प्रदूषण, मृदा अपरदन मानव गतिविधियों द्वारा रचित कुछ क्षेत्रिय परिणामों में से एक है उनके द्वारा पर्यावरण को भी प्रभावित किया जाता है।

इसलिए हम लोगों द्वारा जो कुछ भी गलत किया गया है उसे केवल हम लोगों को ही सुधारना चाहिए। पर्यावरण की सुरक्षा एवं प्रबंधन के लिए हमारी आवाज पर्यावरण शिक्षा के लिए आवश्यक है। यह लोगों और समाज को वर्तमान एवं भविष्य के संसाधनों का बेहतरीन ढ़ंग से उपयोग करने के तरीके को सिखाने का एक सही कदम है। पर्यावरण शिक्षा के जरिए, सभी लोग स्थानीय प्रदूषण की ओर अग्रसर होने वाले मौलिक मुदों को सही करने का ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

मनुष्य के मध्य सभी रिश्तों और सभी पर उनका असर एवं उन सभी को प्रभावित करने के लिए पर्यावरण को उचित ढ़ंग से परिभाषित किया गया है।

पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण शिक्षा में लोगों को बताया जाता है कि प्राकृतिक पर्यावरण के तरीके और प्रदूषण मुक्त पर्यावरण को बनाए रखने के लिए परिस्थिति की तंत्र को कैसे व्यवस्थित रखना चाहिए। इससे संबंधित चुनौतियों का सामना करने के लिए पर्यावरण शिक्षा आवश्यक कौशल और विशेष ज्ञान को प्रदान करना चिंतन का एक दृष्टिकोण पैदा करना और पर्यावरणीय चुनौतियों को नियंत्रित करने के आश्यक कौशल को प्रदान करना है।

1972 में द्वारा आयोजित मानव पर्यावरण पर स्टॉकहोम सम्मेलन के बाद ई.ई. केवैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा हासिल की थी। इस सम्मेलन के तुरन्त बाद यूनेस्कों ने अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम (आई.ई.ई.पी.) की भी शुंरूआत की थी ।

पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता

प्रत्येक देश शिक्षा के साथ पर्यावरणीय संबंधी चिंताओं को सुलझाने के प्रयासों में लगा रहा है। इन विभिन्न देशों के अनुसार ई.ई को केवल शिक्षा प्रणाली का ही हिस्सा नही होना चाहिए बल्कि राजनैतिक व्यवस्था में भी भाग लेना चाहिए जिससे राष्ट्रीय स्तर पर कार्य, नीतियाँ और उचित योजनाएँ तैयार की जा सके।

पर्यावरणीय शिक्षा को पर्यावरणीय स्थिति का आँकलन करने में सक्षम होना चाहिए और पर्यावरण की क्षति का निवारण करने में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। ई.ई. को नियमानुसार योजनापूर्ण बनाना चाहिए क्योकि दैनिक जीवन में सामान्य बदलाव पर्यावरण को सुधारने में ये बहुत बड़ा योगदान दे सकते है।

पर्यावरण की सुरक्षा हर किसी की जिम्मेदारी है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा एक समूह या समाज तक ही सीमित नही होनी चाहिए बल्कि हर व्यक्ति को पर्यावरण के बचाव संबंधी जानकारी होनी चाहिए। यह एक निरंतर और जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया होनी चाहिए तथा पर्यावरण शिक्षा के प्रति व्यावहारात्मक होना चाहिए ताकि इसे भलीभाँती

लागू किया जा सके ।

अगर बच्चों को संसाधनों, पर्यावरणीय प्रदूषण, मृदा अपरदन, अवनति और संकटग्रस्त पौधों एवं विलुप्त जानवरों के बचाव तथा संरक्षण के बारे में सिखाया जाता है तो पर्यावरण के संरक्षण में काफी हद तक सुधार हो सकता है। शिक्षा एक तरह का निवेश है जो समय के साथ–साथ एक मूल्यवान संपत्ति में बदल जाता है।

भारत विश्वविद्यालयों में शिक्षण, अनुसंधान और प्रशिक्षण पर काफी ध्यान दिया गया है। 20 से अधिक विभिन्न, विश्वविद्यालयों और संस्थानों में पर्यावरण इंजीनियरिंग, संरक्षण और प्रबंधन, पर्यावरण स्वास्थ और सामाजिक विज्ञान जैसे पाठ्यक्रमों को पढ़ाया जाता है।

राष्ट्रव्यापी पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने पर्यावरण और वन मंत्रालय के समर्थन से अगस्त 1984 में पर्यावरण शिक्षा केन्द्र (सी.ई.ई) स्थापित किया था। सी.ई.ई के प्रमुख कार्यो में से एक यह है कि पर्यावरण शिक्षा की भूमिका उचित मान्यता देने का प्रयास किये जाये। सी.ई.ई. इससे संबंधित कई शैक्षिक कार्यक्रमों को चलाती है। सामाजिक बदलावों के कारण आज बच्चे आंतरिक खेलों और इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों को खेलने में व्यस्त रहते है। वे अपना अधिकांश समय टेलीविजन देखने, संगीत सुनने, विडियों गेम खेलने या इंटरनेट पर सर्फिंग या कम्प्यूटर का उपयोग करने में बीता देते है और उनके पास चारों और यात्रा करने एवं चारों और प्राकृतिक दुनिया के बारे में जानने के लिए बिल्कुल भी समय नही है। इससे ने केवल बच्चों के स्वास्थ पर प्रभाव पड़ता है बल्कि उन्हें अपने परिवेश और प्रकृति से खिलवाड़ जैसी स्थिति का सामना करना पड़ता है। यद्यपि वे बच्चे वयस्क भी हो जाए तो भी उन्हें प्राकृतिक संरक्षण के बारे में जानकारी नही हो पाती हैं प्राकृतिक संसाधनों की कमी के कारण पर्यावरण की दृष्टि से शिक्षित पीढ़ी के लिए इस शिक्षण की जरूरी आवश्यकताओं में से एक है।

छात्रों को अपने परिवेश से परिचित कराने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और उनके लिए कार्य योजना की एक रूपरेखा भी तैयार की जानी चाहिए। सामाजिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए ई.ई. की अत्यधिक आवश्यकता और छात्रों को बचपन से ही प्रकृति के बारे में अवगत कराना एक सही विकल्प है।

पर्यावरण शिक्षा, जागरूकता एवं प्रशिक्षण (ईईएटी)

उद्देश्य

- औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षणिक/शिक्षण सामग्री और सहायता का विकास करना।
- लोगों की बीच सभी स्तरों पर जागरूकता का प्रचार करने वाले गैर–सरकारी संगठनों, जन मीडिया और अन्य संबंधित संगठनों को प्रोत्साहित करना।
- मौजूदा शैक्षणिक/वैज्ञानिक/अनुसंधान संस्थानों के माध्यम से पर्यावरण संबंधी शिक्षा का प्रचार करना।
- पर्यावरण संबंधी शिक्षा का प्रशिक्षण और मानवशक्ति का विकास सुनिश्चित करना और
- पर्यावरण के परिरक्षण और संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक बनाना।

इस योजना के भाग के रूप में आयोजित किए गए कार्यक्रम या शुरूआत की गई पहल को औपचारिक एवं अनौपचारिक क्षेत्रों में श्रेणीबद्ध किया गया है।

औपचारिक पर्यावरण शिक्षा के अंतर्गत आने वाले कार्यक्रम

- विद्यालय प्रणाली में पर्यावरण शिक्षा
- पर्यावरण प्रशंसा पाठ्यक्रम
- प्रबंधन एवं व्यावसायिक अध्ययनों में पर्यावरण अवधारणाऐं
- अनौपचारिक पर्यावरण शिक्षा के अंतर्गत आने वाले कार्यक्रम

– राष्ट्रीय पर्यावरण जागरूकता अभियान (एनईएसी)

– ग्लोब

– जन जागरूकता

सूखा, बाढ़, चक्रवाती तूफानों, भूकम्प, भूस्खलन, वनों में लगने वाली आग, ओलावृष्टि, टिड्डी दल और ज्वालामुखी फटने जैसी विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान नही लगाया जा सकता है, न ही इन्हें रोका जा सकता है लेकिन इनके प्रभाव को एक सीमा तक जरूर कम किया जा सकता है। जिससे कि जान–माल का कम से कम नुकसान हो। यह कार्य तभी किया जा सकता है, जब सक्षम रूप से आपदा प्रबंधन का सहयोग मिलें। प्रत्येक वर्ष प्राकृतिक आपदाओं से सर्वाधिक प्रभावित होने वाले देशो में भारत का दसवां स्थान है।

परिचय

आपदा प्रबंधन के दो महत्वपूर्ण आंतरिक पहलू है। यह है पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती आपदा प्रबंधन। पूर्ववर्ती आपदा प्रबंधन का जौखिम प्रबंधन के रूप में जाना जाता है।

आपदा के खतरे जौखिम एवं शीघ्र चपेट में आनेवाली स्थितियों के मेल से उत्पन्न होते है। यह कारक समय और भौगोलिक दोनों पहलुओं से बदलते रहते है। जोखिम प्रबंधन के तीन घटक होते है। इसमें खतरे की पहचान, खतरा कम करना (ह्रास) और उत्तरवर्ती आपदा प्रबंधन शामिल है।

आपदा प्रबंधन का पहला चरण है खतरों की पहचान। इस अवस्था पर प्रकृति की जानकारी तथा किसी विशिष्ट अवस्थल की विशेषताओं से संबंधित खतरे की सीमा को जानना शामिल है। साथ ही इसमे जोखिम के आंकलन से प्राप्त विशिष्ट भौतिक खतरों की प्रकृति की सूचना भी समाविष्ट है।

इसके अतिरिक्त बढ़ती आबादी के प्रभाव क्षेत्र एवं ऐसे खतरों से जुड़े माहौल से सबंधित सूचना और डाटा भी आपदा प्रबंधन का अंग है। इसमें ऐसे निर्णय लिए जा सकते है कि निरंतर चलने वाली परियोजनाएं कैसे तैयार की जानी है और कहा पर धन का निवेश किया जाना उचित होगा, जिससे दुर्दश्य आपदाओं का सामना किया जा सके।

इस प्रकार जौखिम प्रबंधन तथा आपदा के लिए नियुक्त व्यावसायिक मिलकर जोखिम भरे क्षेत्रों के अनुमान से संबंधित कार्य करते है। ये व्यवसायिक आपदा के पूर्वानुमान के आंकलन का प्रयास करते है और आवश्यक एहतियात बरतते है।

जनशक्ति वित और अन्य आधारभूत समर्थन आपदा प्रबंधन की उप–शाखा का ही हिस्सा है। आपदा के बाद की स्थिति आपदा प्रबंधन का महत्वपूर्ण आधार है। जब आपदा के कारण सब कुछ अस्त–व्यस्त हो जाता है। तब लोगों को स्वयं ही उजड़े जीवन को पुनः शुरू करने पड़ते है।

आपदा प्रबंधक के कार्य

आपदा प्रबंधकों को ऐसे प्रभावित क्षेत्रों में सामान्य जीवन बहाल करने का कार्य करना पड़ता है। आपदा प्रबंधन व्यवसायिक समन्वयक के रूप में कार्य करता है। यह सुनिश्चित करता है कि समस्त आवश्यक सहायक साधन और सुविधाएं सही समय पर आपदाग्रस्त क्षेत्र में उपलब्ध है, जिससे कम से कम नुकसान होता है।

यह प्रबंधक ऐसे विशेषज्ञ लोगों के समूह का मुखिया होता है, जिनकी सेवाएं आपदा के समय अनिवार्य होती है। जैसे – डॉक्टर, नर्स, सिविल इंजीनियर, दूरसंचार विशेषज्ञ, वास्तुशिल्प, इलेक्ट्रीशियन इत्यादि।

आपदा प्रबंधन की सबसे बड़ी चुनौती आपदाग्रस्त सीमा क्षेत्र और होने वाली क्षति का आंकलन करना है। इससे इस क्षेत्र का कार्य अत्यधिक वैज्ञानिक प्रक्रिया का रूप ले लेता है। आपदाग्रस्त क्षेत्रों की भौगोलिक एवं आर्थिक स्थितियों के कारण चुनौती और भी बढ़ जाती है।

आपदा अधिकार क्षेत्र की तमाम सीमाएं लांघ सकती है। विपत्ति के समय अनजान कार्यो की जिम्मेदारी उठाने की आवश्यकता भी उत्पन्न होती है। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए विशेष कमियों की जरूरत होती है। इससे कार्य और अधिक कठिन हो जाता है।

आपदा

आपदा एक प्राकृतिक या मानव निर्मित जोखिम का प्रभाव है जो समाज या पर्यावरण को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। आपदा शब्द ज्योतिष विज्ञान से आया है। इसका अर्थ होता है जब तारे बुरी स्थिति में होते है। तब बुरी घटनायें होती है।

समकालीन शिक्षा में आपका अनुचित प्रबंधित जोखिम के परिणाम के रूप में देखा जाता है। ये खतरें आपदा और जोखिम के उत्पाद है। आपदा जो कम जोखिम के क्षेत्र में होते है। वे आपदा नही कहे जाते है जैसे निर्जन क्षेत्र में

विकासशील देश आपदा का भारी मूल्य चुकाते है। आपदा के कारण 15 प्रतिशत मौत विकासशील देशों में होती है और प्राकृतिक आपदा से होने वाली मौत 20 गुना ज्यादा है। औद्योगिक देशों की तुलना में विकासशील देशों का (GDP%)

आपदा को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है। एक दुखद घटना, जैसे सड़क दुर्घटना, आग, आंतकवादी हमला या विस्फोट, जिसमें कम से कम एक पीड़ित व्यक्ति हो।

वर्गीकरण

कोई भी खतरा विनाश में परिवर्तित हो इससे पहले मनुष्य इसे रोक सकता है। इस प्रकार सभी आपदा मानवीय असफलता का परिणाम है जो अनुचित आपदा प्रबंधन (Disaster Management) उपायों का सूचक है। आपदा नियमित प्राकृतिक या मानव निर्मित में बटा है हालांकि विकासशील देश (Developing countries) में कोई एक मूल कारण नही है। एक विशेष आपदा प्रभाव को बढ़ाने वाला हो सकता है। भूकम्प, जो समुद्री तटों में सुनामी के द्वारा बाढ़ लाता है इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्राकृतिक आपदा

एक प्राकृतिक आपदा एक स्वाभाविक परिणाम है (जैसे ज्वालामुखी विस्फोट (Volcanic eruption) या भूकम्प जो मनुष्य को प्रभावित करते है। उपर्युक्त आपातकालिन प्रबंधन (Emergency management) की कमी द्वारा मानव सुभेद्यता (Vulnerability) से वित्तिय, पर्यावरण सम्बन्धी या मानवीय प्रभाव होते है। परिणामी नुकसान या विरोध आपदा जनसंख्या के सहयोग की क्षमता पर निर्भर करती है। समझ निर्माण में केन्द्रित है 'आपदा के समय खतरों के होने से जोखिम होता है। इसलिए प्राकृतिक खतरा कभी भी ऐसे क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा नही होगी यानि निर्जन क्षेत्रों में प्रबल भुकम्प प्राकृतिक शब्द विवादित है क्योंकि घटनायें बिना मानवीय सहभागिता के आपदा या खतरा नही है।

मानव निर्मित आपदा

मानवीय कार्य से निर्मित आपदा लापरवाही, भूल, या व्यवस्था की असफलता मानव–निर्मित आपदा कही जाती है। मानव–निर्मित आपदा तकनीकी या सामाजिक कहे जाते है। तकनीकी आपदा तकनीक की असफलता के परिणाम है। जैसे इंजीनियरिंग असफलता, यातायात आपदा या पर्यावरण आपदा ;म्दअपतवदउमदजंस क्पेंजमतद्ध ब्लैक होल्स (Black Holes) समेत सामाजिक आपदा एक मजबूत मानवीय प्रेरणा है जैसे आपराधिक क्रिया (Criminal Act) भगदड़, दंगा, युद्ध।

भविष्य के काल्पनिक आपदाओं का जोखिम

फ्लू अत्यधिक जनसंख्या, एंटीबायोटिक प्रतिरोध, सुपरवोल्केनों, ग्लोबल वार्मिग, तेल परमाणु, युद्ध सामग्री, उल्का प्रभाव, हिम युग, वृहत सुनामी, आकाल, भूकम्प, मरूस्थलीकरण, अत्यधिक उपभोग, सूखा, जल संकट, वनों की कटाई, प्रौद्योगिकी, आतंकवाद,

विश्व भर में छोटी और बड़ी आपदाएँ आती रहती है और इनमें जानमाल की बड़े पैमाने पर हानि भी होती रहती है। इनमें प्राकृतिक आपदाँए (बाढ़, सूखा, भूस्खलन, समुद्री तूफान, महामारियाँ इत्यादि) और मानवीय गलतियों के कारण घटित होने वाली आपदाएँ (भोपाल गैस इत्यादि, चेरनोबिल न्यूक्लियर रिएक्टर इत्यादि) भी शामिल है।

जाहिर है इस प्रकार की विपदाओं का कम से कम सामाना करना पड़े और समस्या की स्थिति में नुकसान को सीमित करने एवं पीड़ित लोगों की मदद कैसे की जाए इस बारे में समस्त देशों की सरकारें एवं सवैच्छिक संगठन काफी गंभीरता से रणनीतिया तैयार करने में लगे है। इस क्रम में बड़े पैमान पर वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था और ट्रेंड मान संसाधन तैयार करने पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है।

यह सहज कल्पना की जा सकती है कि कितने बड़े पैमाने पर इस प्रकार का ढांचा तैयार किया जा रहा है और कितनी बड़ी संख्या में ऐसे ट्रेंड़ कमियों की आने वाली समय में आवश्यकता पड़ने वाली है।

डिजास्टर मैनेजमेंट या आपदा प्रबंधन की एक नई विद्या इस मंथन में उभरकर सामने आई है। इनका कार्य क्षेत्र महज आपदा के बाद के पुननिर्माण के काम काज को संभालना या पीड़ित व्यक्तियों की मदद करना भर नही होती है बल्कि आपदा की पूर्व चेतावनी प्रणाली का विकास और इन हानियों को समय रहते न्यूनतम करने से भी जुड़ा हुआ है।

बारहवीं पास से लेकर ग्रेजुएट यूवा इस क्षेत्र में करियर निर्माण के बारे में गंभीरतापूर्वक विचार कर सकते है। समाज कल्याण के साथ आत्मसंतुष्टि और करियर ग्राफ को भी साथ–साथ आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाने का मौका शायद कोई और क्षेत्र नही देता है।

इस प्रकार के ट्रेंड लोगों से क्षतिग्रस्त या पीड़ित लोगों की पुर्नस्थापना तथा लोगों के जीवन के दुबारा सामान्य स्तर पर कम से कम समय मे लाने की अपेक्षाएँ भी की जाती है। तो देखा जाए तो यह कार्यक्षेत्र अपने साथ विशिष्टता के साथ संवेदनात्मक पहलुओं को भी समेटे हुए है।

इससे प्रबंधन के एक और कार्यकलाप है तो दूसरी और समाज कल्याण की पुरजोर भावनाएँ भी है। इसलिए जरूरी है कि ऐसे ही युवा इस दिशा में करियर निर्माण की पहल करने के बारे में सोचे जो मानवीय संवेदनाओं को समझते हो तथा महज करियर निर्माण के लक्ष्य को लेकर इस क्षेत्र को अपने भविष्य के रूप में नही अपना रहे है।

भारत जैसे विकासशील देशें में प्रायः रोजाना ही ऐसे छोटे–बड़े हादसे तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं से विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को गुजरना पड़ता है। बाद में बचाव के रूप में जितने भी सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयास होते है उनमें न तो आपसी तालमेल होता है और न लोगों तक प्रभावी तरीके से इनका फायदा पहुँच पाता है बल्कि कई दूरदराज के इलाकों में मदद पहुँचाने में काफी लंबा समय लग जाता है और तब तक जान एवं माल की हानि हो चुकी होती है।

यही कारण है कि देश में आपदा प्रबंध न का एक अलग से प्राधिकरण केंन्द्र सरकार के स्तर पर विकसित किया गया है और इसी की शाखाएँ तमाम राज्यों और बड़े शहरों के स्तर पर भी अस्तित्व में आ रही है।

महज चंद वर्षो पहले तक ऐसी ट्रेनिंग के लिए विदेशों मे जान पड़ता था पर अब देश में ही सरकारी एवं प्राइवेट सैक्टर के संस्थान अस्तित्व में आ गए है। इनमें सर्टिफिकेट से लेकर एमबीए स्तर तक के इस विधा से संबंधित कोर्स है।

इस प्रकार की ट्रेंनिग में मुख्य तौर पर निम्न चार पहलुओं पर बल दिया जाता है आपदा के कुप्रभाव को कम से कम करने पर ध्यान देना, आपदागस्त लोगों को तुरंत बचाव एवं राहत की व्यवस्था, प्रभावित लोगों की पुनस्थापना तथा भावी ऐसी आपदाओं से समय रहते कैसे निपटा जाए इसकी रणनीतियाँ बनानी।

देखा जाए तो इस ट्रेनिंग में कम समय में एक्शन की कार्ययोजना और समस्त संसाधनों को एक कुशल प्रबंधक की तरह अत्यंत प्रभावी व सार्थक ढ़ंग से क्रियान्वित करने की तरह अत्यंत प्रभावी व सार्थक ढ़ंग से क्रियान्वित करने की रणनीति पर ज्यादा जोर होता है। यह कार्यक्षेत्र सिर्फ एकेडेमिक महत्व नही है बल्कि मैदानी स्तर पर समस्याओं से जूझते हुए जोखिम भरी स्थितियों में अजाम देने से जुड़ा है।

बारहवीं पास से लेकर ग्रेजुएट यूवा इस क्षेत्र में करियर निर्माण के बारे में गंभीरतापूर्वक विचार कर सकते है। समाज कल्याण के साथ आत्मसंतुष्टि और करियर ग्राफ को भी साथ–साथ आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाने का मौका शायद कोई और क्षेत्र नही देता है। रोजगार के अवसर सरकारी विभागों, बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों (कैमिकल, माइनिंग, पेट्रोलियम सरीखें) बाढ़ नियन्त्रण प्रभागों, एनजीओ तथा अन्य अंतराष्ट्रीय स्तर के इंटरनेशनल रेडक्रॉस, यूएनओं सरीखें संगठनों तक में मिल सकते है।

डिजास्टर मैनेजमेंट अध्यापन का भी एक अन्य क्षेत्र भी कार्यानुभवी लोगों के लिए हो सकता है। प्रमुख संस्थानों में डिजास्टर मैनेजमेंट इंस्टिटयूट (भोपाल), डिजास्टर मिटिगेशन इंस्टियूट (अहमदाबाद), सेंटर फार डिजास्टर मैनेजमेंट

(पुणें), नेशनल इन्फामेंशन सेंटर ऑफ अर्थ– के इंजीनियर आईआईटी (कानपुर) का नाम लिया जा सकता है।

आपदा प्रबंधन

आपदा का अर्थ है अचानक होने वाली एक विध्वंसकारी घटना जिससे व्यापक भौतिक क्षति होती है, जान–माल का नुकसान होता है। यह वह प्रतिकूल स्थिति है जो मानवीय, भौतिक, पर्यावरणीय एवं समाजिक कार्यकरण को व्यापक तौर पर प्रभावित करती है। आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 में आपदा से तात्पर्य किसी क्षेत्र में हुए उस विध्वंस, अनिष्ट, विपत्ति या बेहद गंभीर घटना से है जो प्राकृतिक या मानवजनित कारणों से या दुर्घटनावश या लापरवाही से घटित होती है और जिसमें बहुत बड़ी मात्रा में मानव जीवन की हानि होती है या मानव पीड़ित होता है या संपत्ति को हानि पहुँचती है या पर्यावरण का भारी क्षरण होता है। यह घटना प्रायः प्रभावित क्षेत्र के समुदाय की सामना करने की क्षमता से अधिक भयावह होती है।

भारत में प्रमुख आपदाएँ

1. जल एवं जलवायु से जुड़ी आपदाएँ, चक्रवात, बवण्डर एवं तूफान, ओलावृष्टि, बादल फटना, लू व शीतलहर, हिमस्खलन, सूखा, समुद्ररक्षण, मेघगर्जन व बिजली का कड़कना
2. भूमि संबंधी आपदाएं, भूस्खलन एवं कीचड़ का बहाव, भूकंप, बांध का टूटना, खदान में आग,
3. दुर्घटना संबंधी आपदाएं, जंगलों में आग लगना, शहरों में आग लगना, खदानों में पानी भरना, तेल का फैलाव, प्रमुख इमारतों का ढहना, एक साथ कई बम विस्फोट, बिजली से आग लगना, हवाई, सड़क एवं रेल दुर्घटनाएं
4. जैविक आपदाएं, महामारियां, कीटों का हमला, पशुओं की महामारियां, जहरीला भोजन,
5. रासायनिक, औद्योगिक एवं परमाणु संबंधी आपदाएं, रासायनिक गैसे का रिसाव, परमाणु बम गिरना।
6. नागरिक संघर्ष, सांप्रदायिक एवं जातीय हिंसा, आदि भी आज प्रमुख आपदाएं है।

आपदा प्रबंधन में शामिल तत्व

आपदा प्रबंधन वह प्रक्रिया है जो आपदा के पूर्व की समस्त तैयारियों, चेतावनियों, पहचान, प्रशासन, बचाव राहत, पुनर्वास, पुनर्निर्माण तथा आपदा से बचने के लिए अपनायी जाने वाली तत्पर अनुक्रियाशीलता इत्यादि के उपायों को इंगित करती है। आपदा प्रबंधन की खास विशेषताएं अग्रलिखित है।

आपदा प्रबंधन आपदा आने की चेतावनी से लेकर उसके पश्चात पुनर्वास, पुनर्निर्माण एवं भविष्य के लिए आपदा रोकथाम एवं बचाव इत्यादि कृत्यों तक विस्तारित है।

यह संपूर्ण लोक प्रशासन की एक ऐसी विशेषीकृत शाखा है जो प्राकृतिक एवं मानवीय कारणों से उत्पन्न आपदाओं के नीति नियोजन, नियंत्रण, समन्वय, राहत बचाव एवं पुनर्वास इत्यादि का अध्ययन करती है।

आपदा प्रबंधन एक जटिल तथा बहुआयाती प्रक्रिया है अर्थातृ केंन्द्र, राज्य एवं स्थानीय शासन के साथ–साथ बहुत सारे विभाग, संस्थाएं एवं समुदाय इसमें अपना योगदान देते हे।

यह प्राथमिक रूप से सरकारी दायित्व के इंगित करता है किंतु सामुदायिक एवं निजी सहयोग के बिना यह कार्य अधुरा है। आपदाएं सार्वभौमिक एवं सर्वकालिक घटनाएं है इसलिए आपदा प्रबंधन का कार्य भी अंतराष्ट्रीय समन्वय से जुड़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त आपदा प्रबंधन के कई आयाम है जिनके तहह जोखिम विश्लेषण, चेतावनी एवं वैकल्प्कि व्यवस्था, बचाव एवं राहत कार्य, बहुउदेशीय निर्णयन, पुनर्वास एवं पुनर्निर्माण, इत्यादि आते हे।

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान

आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 के तहत स्थापित राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान को मानव संसाधन विकास, क्षमता निर्माण, प्रशिक्षण, अनुसंधान, प्रलेखन और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में नीति की वकालत के लिए नोडल राष्ट्रीय आपदा

प्रबंधन संस्थान, सभी स्तरों पर रोकथाम और तैयारियों की संस्कृति को विकसति कर व बढ़ावा देकर आपदा के प्रति सहिष्णु भारत निर्मित करने के अपने मिशन को पूरा करने हेतु तेजी से अग्रसर है।

***विभागाध्यक्ष दर्शनशास्त्र**
राज. कन्या महाविद्यालय
श्रीगंगानगर, (राजस्थान)

दीर्घकालीन उपाए

- भविष्य के सभी खतरों के लिए राज्य आपदा प्रबंधन की तैयारी।
- जिला स्तरीय आपदा प्रबंधन के योजना की तैयारी हेतु प्रयास।
- NDRF तथा राज्य अग्निशमन सेवा की संयुक्त मॉक ड्रिल का संचालन।
  विशेष आपदा के समय राज्य के समुदाय आधारित तैयारी तथा इससे संबंधित प्रिंट मीडिया तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा जन जागरूकता प्रोग्राम का समय पर आयोजन तथा कार्यक्रम।

राज्य द्वारा अपनाए गए आपदा प्रबंधन से संबंधित रचनातंत्र तथा कार्य प्रणाली यंत्र –

- SDMA का गठन एवं कार्यशीलता।
- राज्य के सभी 24 जिलों में क्ड। का गठन।
- SEC का गठन किया गया तथा यह अभी कार्यशील है।
- SDRF के गठने हेतु तैयारी